प्रोफ (डॉ०) सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य एवं अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, डेहलाल महिला कॉलेज, सासाराम

B.A - PART - III (Honour's) - Paper - V

(सामाजिक विचारों का इतिहास)

Topic - गाँधीजी के सर्वोदय का सिद्धांत :-

सर्वोदय, अंग्रेज लेखक रस्किन की एक पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' का गाँधीजी द्वारा गुजराती में अनूदित एक पुस्तक है। 'अन टू दिस लास्ट' का अर्थ है - 'इस अंतवाले को भी'। हिन्दी में इसका अर्थ है - 'सबका उदय, सबका विकास।'

सर्वोदय भारत का पुराना आदर्श है। हमारे ऋषियों ने गाया है, "सर्वेपि सुखिनः संतु।" सर्वोदय शब्द भी नया नहीं है। जैन मुनि समंतभद्र कहते हैं — "सर्वापदामंतकरं निरंतं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।" 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म', "वसुधैव कुटुम्बकम्", अथवा सोऽहम् और तत्वमसि ने हमारे पुरातन आदर्शों में सर्वोदय का सिद्धांत अंतर्निहित है।

सर्वोदय समाज गाँधी के कल्पनाओं का समाज था। जिसके केंद्र में ग्रामीण ग्राम व्यवस्था थी। विनोबाजी ने कहा है कि, "सर्वोदय का अर्थ है, सर्व सेवा

के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति।"
सर्वोदय के व्यावहारिक स्वरूप को हम बहुत हद तक विनोबाजी के भूदान आन्दोलन में देख सकते हैं।

सुबहवाले को जितना शामवाले को भी उतना ही, इसमें समानता और अद्वैत का वह तत्व समाया है, जिस पर सर्वोदय का विशाल प्रसाद खड़ा है।

सर्वोदय दर्शन के प्रमुख तत्व :—

(1.) पारिश्रमिक की समानता।

(2.) प्रतियोगिता का अभाव।

(3.) साधनशुद्धि की भावना।

(4.) आनुवांशिक संस्कारों से लाभ उठाने के लिए ट्रस्टीशिप का सिद्धांत।

(5.) विकेंद्रीकरण की योजना।

सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जाति-विहीन और शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले। यही गाँधीजी की मूल भावना थी। जो हमारे प्राचीन वेद, उपनिषद में पहले से ही वर्णित है।

x————x————x————x————x